चाणक्यनीतिः
CĀṆAKYANĪTI

हिन्दी और अंग्रेज़ी अनुवाद सहित
With Hindi and English Translation

अनुवादक
सत्यव्रत शास्त्री

Translator
Satya Vrat Shastri

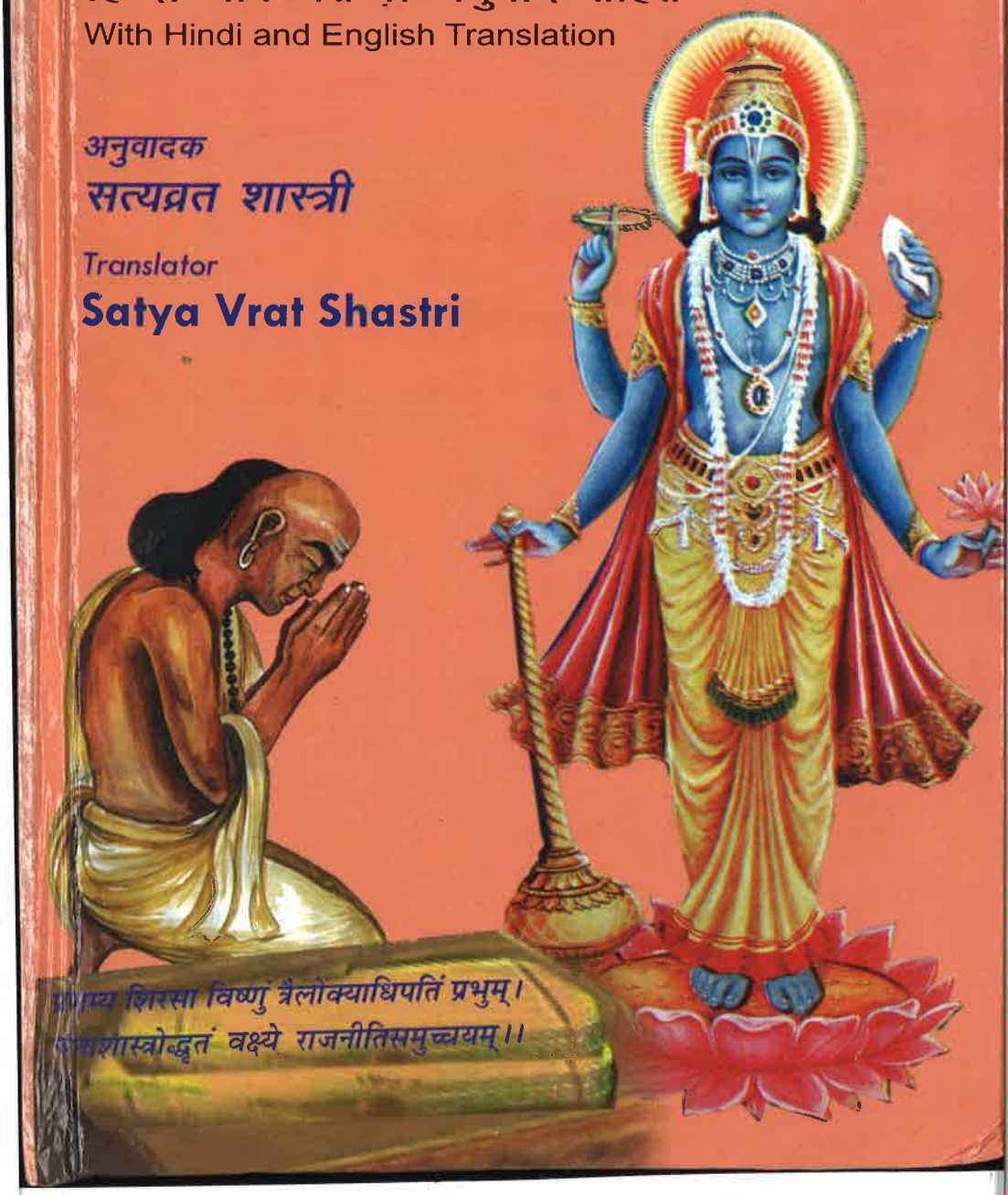

प्रणम्य शिरसा विष्णुं त्रैलोक्याधिपतिं प्रभुम्।
नानाशास्त्रोद्धृतं वक्ष्ये राजनीतिसमुच्चयम्।।

प्रकाशकीय

भारतीय इतिहास में वासुदेव कृष्ण के पश्चात् सर्वाधिक प्रभावशाली नीतिज्ञ ईस्वी पूर्व चौथी शताब्दी में तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य विष्णुगुप्त (चाणक्य) हुए जिन्होंने अपनी नीति के बल पर मगध की दुराचारी नंद वंशीय सत्ता को समाप्त कर अपने साधनहीन शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध का अधिपति उसी तरह बना दिया जिस तरह श्रीकृष्ण ने अपनी नीति के बल पर शक्तिशाली दुराचारी कौरवों को समाप्त कर विपन्न पाण्डवों को हस्तिनापुर का अधिपति बना दिया था। कितने ही गणतंत्रों व राजतंत्रों को एक कर भारत भूमि को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करने के प्रयास में वे लगे रहे। आचार्य चाणक्य ने अपने अनुभवों, विचारों व सिद्धान्तों को सूत्र बद्ध किया जो 'चाणक्यनीति' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इस नीति ग्रंथ में परिस्थितियों, व्यवहारों व आचरणों को लेकर जो गहन चिंतन परक निर्देश दिए गए हैं वे आज भी इतने व्यावहारिक और उपयोगी हैं कि उनके अनुसार प्रयासरत होकर व्यक्ति अपने जीवन में बड़े लक्ष्यों को प्राप्त कर सफल बन सकता है। इस तरह देखें तो यह 'चाणक्यनीति' अपने आप में प्रबंधन शास्त्र है। इस संस्कृत ग्रंथ की इस महती उपयोगिता को देखकर ही मैंने आदरणीय शिखरस्थ विद्वान्, संस्कृत जगत् के भीष्म पितामह, प्रो. सत्यव्रत शास्त्री से इसका सम्पूर्ण रूप से हिन्दी व अंग्रेज़ी में अनुवाद करने का निवेदन किया, जब उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने इसके बीच-बीच के अंशों का अनुवाद कर रखा है। उन्होंने तत्काल मेरे निवेदन को स्वीकार किया और अपनी अतुलनीय शैली में इसके छूटे हुए अंशों का भी अनुवाद कर डाला। इसकी विस्तृत भूमिका भी उन्होंने लिखी जो अपनी विद्वत्ता, गंभीरता तथा प्रवाहमय शैली के कारण विलक्षण है। अनुवाद को जितना भी उत्कृष्ट बनाया जा सकता था उतना उत्कृष्ट बनाने के लिए उन्होंने कठोर प्रयास किया जैसा कि इस कृति की भूमिका में दिये गए उन उदाहरणों से स्पष्ट है जिनका सही-सही अनुवाद आसान नहीं था, वह अनुवाद जिसमें मूल के भाव की सही पकड़ हो। संस्कृत के एक शब्द के अनेक

प्रकरणों में सही समानान्तर शब्द की खोज के दौरान अनेक विकल्प उनके सामने आए। उनमें से जो उन्हें सही लगा उसका उन्होंने चयन किया जिसमें उन्हें बहुत प्रयास करना पड़ा। यह प्रयास उनकी सावधानी और परिशुद्धता के प्रति आग्रह का प्रतीक है। इस सबके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि भारतीय विद्या मन्दिर इस महत्त्वपूर्ण कृति को प्रकाशित कर रहा है हिन्दी और अंग्रेज़ी अनुवाद तथा विस्तृत भूमिका के साथ जो कि इसके भारतीय मनीषा और संस्कृति के जन-जन में प्रचार-प्रसार के लक्ष्य के अनुरूप है। मुझे पूर्ण आशा है कि जन-जन में इसका स्वागत होगा। इससे भारतीय विद्या मन्दिर को इस प्रकार के अन्य कार्यों को करने की और अधिक प्रेरणा मिलेगी।

सिम्पलेक्स हाउस
27, शेक्सपीयर सरणि
कोलकाता-700 087

बिट्ठलदास मूंधड़ा
अध्यक्ष
भारतीय विद्या मंदिर